

गंगानगर परिचय

[गंगानगर जिले का भौगोलिक, ऐतिहासिक पुरातत्व एवं सामाजिक विवेचन]

लेखक

श्रीमप्रवाश गुप्त

एम ए, बी एड, एल-एल बी

विद्यालय उपनिरीक्षक

श्री गंगानगर

प्रकाशक

अग्रवाल साहित्य सदन

श्री गंगानगर

प्रकाशक :
अग्रवाल साहित्य सदन
थीमगागर

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण
१९६६

मूल्य ४ रु० ५० पै० मात्र

मुद्रक स्वामी प्रेम, मेरठ



प्राक्कथन

1. - गगानगर जिला राजस्थान में बड़ा महत्वपूर्ण स्थान रखता है परन्तु इस जिले के विषय में सम्यक जानकारी प्रस्तुत करने वाली एक भी पुस्तक अभी तक वही से प्रकाशित नहीं हुई । इस अभाव की पूर्ति हेतु इस पुस्तक को लिखने का प्रयास किया गया है । इस पुस्तक के लिखने की प्रेरणा के लिए मैं माननीय श्री निरजन नाथ जी आचार्य पूर्व उप-शिक्षा मंत्री, राजस्थान, का आभारी हूँ जिन्होंने राजस्थान के शिक्षा प्रशासनिक अधिकारियों की दिसम्बर १९६४ में नवलगढ़ में हुई कांफ्रेंस में यह सुझाव रखा था कि "राजस्थान के प्रत्येक जिले पर एक ऐसी पुस्तक उपलब्ध की जानी चाहिए जिससे बच्चे-बूढ़े सभी उस जिले के भूगोल, इतिहास, संस्कृति, पुरातत्व, कला एवं प्रशासन के सम्यन्ध में जान सकें" । साथ ही मैं श्रीअनिन बोदिया अपर निदेशक, प्राथमिक, एवं माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, का भी कृतज्ञ हूँ जिनकी प्रेरणा और मार्गदर्शन भी मुझे समय-समय पर प्राप्त होता रहा है ।

श्री रामधनदास गोयल, प्रधानाध्यापक, राजकीय बहुद्देशीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, श्री गगानगर एवं श्री जानकीप्रसाद उपाध्याय, प्रधानाध्यापक,

राजकाय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, लालगढ जाटान ने मेरा उत्साह बढ़ाने में थोड़ा बसूर न उठा रखी, उनकी बहुमूल्य सहायता को भी मैं नहीं भूल सकता। मुझे इस पुस्तक के लिखने में मैग्डो हिन्दी और अंग्रेजी पुस्तकों से सहायता मिली है अतएव मैं उनके लेखकों को धन्यवाद देता हूँ।

विश्याम है कि अपने जिले के बारे में बहुत सी बातों की जानकारी प्राप्त कर लेने पर यच्चो में राजस्थान एवं भारत के बारे में और अधिक जानकारी प्राप्त करने की जिज्ञासा बढ़ेगी और ये ज्ञान प्राप्ति की ओर भूकेंगे। यह पुस्तक छात्रों को ही नहीं अन्य व्यक्तिों के लिए भी जो गंगागढ़ जिले के बारे में कुछ जानकारी चाहेंगे, यहो लाभदायक सिद्ध होगी, ऐसी मेरी आशा है।

इस प्रकार के प्रथम प्रयास में कमियाँ एवं त्रुटियाँ पाए जा सकेंगी अवश्यम्भावी है अतः इनके सुधार के लिए शुभावश्यक आमन्त्रित है जिससे अगले सम्बर्ण में उनका समावेश किया जा सके।

श्री गंगागढ़

श्रीमप्रकाश गुप्त

अनुक्रमणिका

१ भौगोलिक वर्णन

१ स्थिति और प्राकृतिक दशा

२ जनवायु

३ प्राकृतिक वनस्पति

४ पशुधन

५ निचाह

६ कृषि

७ खनिज सम्पत्ति

८ विद्युत् गति

९ उद्योग धाने

१० जनसंख्या

११ परिवहन और संचार साधन

१२ प्रशासनिक व्यवस्था

१३ प्रधान नगर

२ ऐतिहासिक दृष्टि भूमि

१ अति प्राचीन काल (१३०० ई० पू० से ५०० ई० पू० तक)

२ प्राचीन काल (५०० ई० पू० से १४० ई० तक)

३ मध्यकाल (१४० ई० से १४६५ ई० तक)

४ अर्वाचीन काल (१४६२ ई० से १९३० ई० तक)

१ मन्वेता

२ स्वायत्त शासन

३ पुरातत्त्व

१ समग्रत

२ कालीवगा

३ अथ महत्त्वपूर्ण स्थान

४ सप्रदानय

४ सामाजिक धर्म संस्कारिक जीवन

१ लोक धर्म और लोकगीत

२ लोकगीत

३ सामाजिक व्यवस्था

THE
KINGDOM OF

YEN



गंगानगर परिचय

१-भौगोलिक वर्णन

(१) स्थिति और प्राकृतिक दशा

भूमिका

वर्तमान राजस्थान राज्य राजपुताने की देनी रियासतों का एक ही राज्य बनाने का एक ही फैसला २७ मार्च १९४८ को बना। इस नवनिर्मित राजस्थान में २० जिलों में जिनमें से आठ गंगानगर भी एक है। राजस्थान के निर्माण में पहिले गंगानगर जिला बीकानेर राज्य का एक अंग था। उस समय बीकानेर राज्य में तीन जिले थे और उनमें इन जिलों का प्रमुख स्थान था।

गंगानगर जिले का स्वरूप जमा बि वर्तमान में स्थित है। काफी परिवर्तनों के बाद विद्यमान कुछ वर्षों में ही बना है। १९२७ में पहिले स्थल गंगानगर नाम का अधिनियम बना था। इन वर्षों तक बीकानेर राज्य का निर्माण में बड़ा भूमिका था — बीकानेर, मुजानगढ़, गंगी और मुरगढ़। गंगी निर्माण में इन जिलों की नाहर और भांसा नालों के घाटी का और मुरगढ़ निर्माण में मुरगढ़, हनुमानगढ़ मिर्जापुरा लहमीन और टीबी व घनुगढ़ की उपलब्धियों थी। निर्माण में १५१० (१९२०) की लहमीन का अधिनियम रामनगर का बना। मई १९२७ में लहमीनों की सीमाओं में परिवर्तन हुआ और मिर्जापुरा, घनुगढ़ और मुरगढ़ लहमीन का कुछ भाग का निर्माण में नई लहमीन गंगानगर, बरनपुर वरनपुर राजमहलनगर और घनुगढ़ बनायी गई। उसी समय बीकानेर राज्य का एक अधिनियम गंगानगर और बीकानेर में आठविया जिले में गंगानगर स्थित

म गगानगर हनुमानगढ़, नाहर भादरा रायसिंहनगर, करनपुर, पन्मपुः
सुरतगढ़ और भनूपगढ़ सहमीर आर् । गगानगर जिला जमाकि बनमाः
म है १६४६ म बना ।

भौगोलिक स्थिति और विस्तार—

गगानगर जिला राजस्थान के उत्तर में उम प्रदेश में स्थित है जि
थार का रणिस्तान कहन है । यह २-°४ म ३०°६ उत्तरी अक्षांस औ
७२°३० म ७४°३० पूर्वी देशांतर रेखाया व बीच पला हुआ है । इसकी
समुद्र व धरातल स ऊर्ध्व १७२ मीटर म १७६ मीटर तक है । इसका
आकार विषम कोण त्रिभुज व समान है । यह जिला पूव स पश्चिम तक
२४० किलोमीटर और उत्तर म दक्षिण तक १७० किलोमीटर है । इसका
क्षेत्रफल २० ४८ वर्ग किलोमीटर है । क्षेत्रफल की दृष्टि स राजस्थान म
११वा पाचवा स्थान है ।

सीमा—

इसकी सीमा उत्तर पूव म पंजाब म उत्तर पश्चिम म पाकिस्तान स,
दक्षिण म बीकानेर और चूरु जिला से लगती है । पाकिस्तान के साथ इसकी
अंतरराष्ट्रीय सीमा २०४ किलोमीटर लम्बा है ।

प्राकृतिक रूपति—

भौगोलिक सिद्धांतों का अनुसार ऐसा माना जाता है कि यह भाग प्रारम्भ
म रणिस्तान नहीं था बल्कि जूरेनिक, क्रीटियस तथा इयासीन युग म
भूमु द्वारा ढका हुआ था । परन्तु अघर टीलीगरी युग म यह भाग पृथ्वी का
आंतरिक शक्तियों के परिवर्तनों के कारण उठन लगा । इस युग म पृथ्वी
पगतार कुछ स्थानों पर दब रही थी तो राजस्थान के क्षेत्र म उठ रही थी
जिसके कारण समुद्र समाप्त हो गया तथा उसके स्थान पर शुष्क रेतीला
भाग प्रकट हुआ । प्योमीन युग म वर्तमान भूमु तट से अरावली तक का

मम ममुद्र म दगा ममा या । इसम ननिया गिग, रन जमा हुई, रतीन
 १ घर व मय प्रकार की चट्टान जमा । तत्पश्चात् फुटने की आन्तरिक
 गतिया के कारण ममुद्र दक्षिण व पश्चिम म ट गया और रतीला भाग
 प्रकट हुआ । म मय के लूण्टन पर नवान परिवर्तना न स्थान लिया ।
 परस्वनी और हृदयनी नियाँ जा इस प्रयेग म होकर उहती थी मूल गई
 तथा जनवायु म भी परिवर्तन होन गया जिनम यह मय और भी गुप्त
 मकर वनमान स्वरूप म आगया ।

प्राकृतिक दृशा—

इसका क्षेत्रफल इतना विस्तृत न पर भी इस जिन की प्राकृतिक
 ममा मयत्र ममा ही है जनी न कोई वन है, न कोई ऊँचा पहाड़ । वर्षा
 ममा व बराबर हान म माग क्षेत्र गुप्त रगिम्मान है । इस जिन व पूर्वी और
 पश्चिमी भाग म यात्रु रत न है तथा स्थान स्थान पर यात्रु रत व टीन जा
 धार या टीन बहमान है यात्रु की पहाडिया की भाति दिशाड दन है ।
 मय तत्र व यु वननी है तो रन मय चलना है मम ममुद्र की नहर चलनी
 न । उनक माग म जनी जरा भा बिमा घाम, फूल तथा और वस्तु की
 ममावट हुई वहा गुप्त मव रन बह जानी है और टीन बन जाते हैं । य
 जीन स्थान नही हाने और यायु व साय माय एक स्थान म दूसर स्थान पर
 चल जान है । वभी वभी तो एक पथ न कम ममय म ही म अपना स्थान
 बनते हैं । इस मिट्टी का वग मोटा हाता है व पानी की नमी रीत
 स्थान की शक्ति प्राय नही होती ।

पण्यर नमी की पानी जो जिननाइ पानी है वह इस जिन के न
 भागा म बहता है । इसक लक्षण म मगानार रन व टीन म और मय
 मीच म पाण्या म जानी है जिन स्थानीय भाषा म जादद मयया
 डावडी व नाम म पुकारन है जही मिट्टी कुछ बग होती है और बग जही
 पिबनी हाती है । मम लनिनी पनिमी भाग म मयान् धनुरगद व पान
 एक बिगान नूमाग है जिन 'बिनय' कहन है । प्राकृतिक मार बहुतपाय

स हान व कारण यह भूमि नती के साथ नहीं है। घग्घर स पर जिं।
 वा सब स अधिक उपजाऊ हिस्सा मिलता है। बघावि उधर की भूमि घग्घर
 उत्तर की तरफ अधिक समतल और कम रतीली हाती गड है। घग्घरपग और
 मूरतग के उत्तर की भूमि एक प्रकार की चिक्की मिट्टी की होती है जिसे
 को 'बग्गी' कहते हैं। गगानगर, हनुमानग और टीबी सम्पीनो में सबसे
 अधिक उपजाऊ मिट्टी मिलती है जो चिक्की है उस राटी' व नाम।
 पुनारते हैं। नोमी मिट्टी हनुमानग में हिमाल की सीमा तक चली गई
 और जम जम पूव की ओर बहने चल जान है उसकी बिस्म अच्छी है।
 जानी है और उसका पीनी मिट्टी की सजा दते हैं। हनुमानग के उत्तर
 हन्वी मिट्टी को 'मरा' व नाम से पुकारते हैं। इसका रंग कुछ पीला
 लिय हुए है और जल सालन में अच्छी होने व बागग ठीक सिचाई हान
 महा उत्तम पदावार हाती है।

इस जिल में गर्मी बहुत अधिक पत्ती है। गर्मियाँ में प्राधिया -
 गर्मियों का जोर रहता है। वर्षा बहुत कम प्राय नहा व बराबर हाता है।
 मौला तक पानी कहा नहीं मिलता।

नदियाँ—

इस जिल में साल भर बहने वाली नदी एक भी नहा है। केवल एक
 नदी लमी है जो वर्षा ऋतु में जिले में प्रवेश कर इसके कुछ हिस्से का
 जल पहुँचाती है। इस नदी का घग्घर या 'नाली' के नाम से पुकारते हैं।
 इसका प्राचीन नाम 'हवन्' है। उस समय हवन् नाम मरख्खती घग्घर
 मावण्डेय की घाराघा से मिलकर बनती थी। उनका सगम मूरतग में कुछ
 ऊपर रामपुरा पर हाता था। आजकल मावण्डेय सिरसा तक पहुँच कर
 नी मरभूमि में गुप्त हो जानी है। घग्घर का उद्गम स्थान तिरमोर जिले
 व अन्नगत हिमानय पर्वत के नीचे का दलुमा भाग है। पटियाला जिले और
 हिमाल जिले में बहकर यह तलवाहा झील के निकट गगानगर जिले में
 प्रवेश करती है। प्राचीन काल में यह इस जिले व मूरतग, घग्घरपग और

ਅੰਕਣਾ ਸੰਗਤਸਰ

ਪਿੰਡ - ਕਲੀ

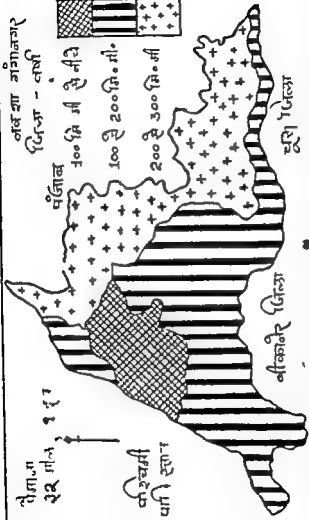
ਪੰਜਾਬ



100 ਮਿ. ਮੀ. ਤੋਂ ਜ਼ਿਆਦਾ

100 ਤੋਂ 200 ਮਿ. ਮੀ.

200 ਤੋਂ 300 ਮਿ. ਮੀ.



ਪੁਲੀ ਪਿੰਡ

ਕੀਕਾਨੀ ਪਿੰਡ

ਲੇਸ਼ਮ
22 ਮੀ. 11

ਕਸ਼ਿਚਰੀ
ਪਾਸੇ ਹਨ

स्थानों के पास से होती हुई भावलपुर से यह मिनचिनाबाद इलाके में गुजरकर मिथुन की मंजिमिलती थी। पर अब यह वर्षा ऋतु का एकर मूखी रहती है और इस समय इनमानगढ़ के पश्चिम से बहती है और प्रायः बरकर बरकर भूमि में सूख जाता है। पानी की मात्रा इतना कम होती है कि स्थानीय रूप से 'नाली' का नाम दिया जान लगा।

(२) जलवायु

विन्ती नक्षत्र के वायु मन्त्र की दशा अर्थात् तापक्रम बढ़ा, नमी, वायु की दशा एक दबाव के वायु के भीम को जलवायु कहते हैं। जलवायु में विन्ती स्थल के भीम मन्त्र की वायु चर्चा रहती है। विन्ती भी प्रत्यक्ष में वर्षा की जलवायु विन्ती महत्त्व रखती है क्योंकि जलवायु न केवल वर्षा की उपज को ही प्रभावित करती है बल्कि मानव-जीवन के वायु के भी माधारण जीवन के भी नियंत्रित करती है।

ग्रीष्म ऋतु की जलवायु अवस्था—

गगनगर जिन्ना एक गम प्रत्यक्ष है। यहां गर्मी के भीम में बहुत बटार गर्मी पड़ती है। इससे अनिश्चित गर्मी का भीम में बहुत बटार जाता है। साधारणतया गर्मी का भीम में प्रारम्भ होकर अगस्त मितम्बर तक रहता है कि नु मई के जून बटार ही गम महान हान है। गर्मी में अधिकतम तापक्रम ४३ स० स० तक पहुँच जाता है। ग्रीष्म ऋतु में आकाश मण्डीन रहता है पर नीला नहीं क्योंकि धूल के बगल में वातावरण में गीलापन आ जाता है। गम हवा के गत के नुफान चरन है जो मयकर हान है। वातावरण का मुख्यता, मिट्टी की प्रकृति और प्राकृतिक वनस्पति के अभाव के कारण रात्रि में तापमान अचानक गिर जाता है। दिन की बनी गर्मी के बाद रात ठंडी हो जाती है क्योंकि धूल के गम के बालू रत रात हान हो गीलापन महती है जिसके कारण हवा भी ठंडी हो जाती है। इसी कारण से गर्मी के भीम में रातें ठंडी और गुनगुनी हान है और

तापक्रम २८° स ५० तक गिर जाता है। दिन में मनुष्य, पशु और पक्षी नरर में व्याकुल हो जाते हैं। वनस्पति जल जाती है, जमीन कुतर जाती है। त्रियाली केवल मिश्रित जलों में जलन को मिलती है मयवा मय सार उठाए दीख पड़ता है। दापहर का गम श्वाण चलती है जिन्हें पू कहते हैं। इन निम्न आपतित साद्रता धूलमय हानी है यहा तक कि वायु में एक प्रनिगत भी नमी नहीं होती।

अधेरिया—

इस जिन में अक्षिण और पश्चिम में हवा चलती है। ये धवन साथ गत जाती है और ये गत की अधेरिया प्राय तीव्र पहर माया करती है। इन अधेरिया का गत प्राय पीला जाता है, कभी उभी जाता भी होता है। कभी कभी तो इन अधेरिया में दिन में भी धीरे धीरे छा जाता है सार गत जसा हय उपस्थित हो जाता है। औसत रूप में वर्ष भर में इन अधेरिया की सार १० दिन की है। ये अधेरिया शाम तीर पर शुरू होती है तबित उभी कभी इनका सा साधारण रंग हो जाती है। मय न भी पड़े परन्तु ठीक होती जाती है। तापक्रम कम हो जाता है, विकरता दूर हो जाती है। इन अधेरियों की गति १० म ८ कि० मी प्रनिघट तक जाती है। इन अधेरिया में मकाम की छत्ते और बह बह पत्तक उल्ला जाता है। इन प्रकार नम वन नुवमान जाता है।

नहर के शान व पूव में अधेरिया व दिन नर - यहा तक कि २-३ मय तक उमानार चलता भी धीरे कभी रात्रि में थोड़े नर व त्रिय नहर जाती था। कभी उभी उभी का धपता माना जाना भी मृतिर हो जाता था। परन्तु इस न अधेरिया का जोर धीरे गति कम होती जा रही है। नहर की विचार के कारण नमी की मात्रा व नर है और यभा कभी उठाए सार अगस्त में नम हो जाती है।

वषा ऋतु—

जम जिन की गणना उन धना में की जाती है जहां वषा नष्ट होती है। यह भूत मानसून की सीमा के छोर पर स्थित है अतः बंगाल की खाड़ी और घरेब मागर से धान वाली दक्षिणी-पश्चिमी मानसून हवाओं में कठिनाई में घोलत वर्षा १२४ से १५० मिलीमीटर तक हो जाती है। जमका कारण यह है कि इन हवाओं की अधिकांश मात्रा मरभूमि के पार करत समय नष्ट हो जाती है। यहाँ वर्षा जुलाई के आरम्भ में शुरू होती है। वर्षा ऋतु हाव के धान मानसून वायु निरंतर नहीं चलती रहती, बल्कि वह कुछ अवधि के अंतर में नज भौक के रूप में आती है। इसमें कई कई दिन शांति पड़ा होती है। इस वषा की एक विशेषता इसकी विषमता और असमान बंटवारा है। कभी कभी यह स्थानीय रूप में पड़ती है। कभी कभी एक भूत के एक भाग में वर्षा होती है और दूसरे भाग में बिल्कुल नहीं होती। यहाँ तक कि कभी कभी एक मन में एक वह जाता है। एक ही नगर में दो स्थानों पर वर्षा के माप में ५० से ७५ मिलीमीटर तक वषा भर में अंतर पड़ जाता है।

जम प्रश्न में जल ही जीवन है। वषा के धान ही धाना कर और धनर प्राणियों में जीवन आ जाता है। वनस्पति बहलहा उठती है। हरी हरी दृश्य चारा आर हरिषासी बिछा जाती है। भूमि हरी भरी हो उठती है। विमानों के हृदय गिर उठते हैं। जिन भर में हृदय की हिनारों उठ पड़ती हैं। प्रकृति की नम नम में जीवन का नवीन गन्धार हो उठता है। गन्धु पानी भी प्रसन्न नजर आता है। वषा आरम्भ होने ही तापक्रम एक दम गिर जाता है।

शीत ऋतु—

जहाँ का मौसम शरार होता है। दिन का तापक्रम २० से ३० से तक रहता है। शीतकालीन वातावरण बहुत शुष्कता होता है। आकाश स्वच्छ रहता है। मन्द में वायु चलती है तथा वायु में नमी की मात्रा बहुत कम

हानी है। जिन ग रात्रि की सपना तापक्रम अधिक रहता है। कभी कभी रात में पाना भी पड़ जाता है और 'यूनितम' त पमान २ म० प्र० तक गिर जाता है। अधिकतर मौसम शुष्क रहता है। मर्दी के जिन में पश्चिम की ओर में घाने वाले नूराना से इस जिले में थोड़ी वर्षा हो जाती है। मर्दी के मौसम में वर्षा का यह माप २५ मिमीमीटर के घामपाम हानी है किन्तु जूनि के नियम 'मवा' बिनाप महत्व है। रबी की फसल के नियम यह प्रत्यत लाभप्रद है क्योंकि इस समय गहू, चना आदि घना में मिर्बा के द्वारा तया दिय जा रहा है। इस वर्षा के 'भावट' कहते हैं।

अनुपात का सबग वराज जा एक कमजोर मानमून और उसके बाद कम मर्दी की वर्षा का है। इस प्रकार के तुर वष में वारानी जमान में बापा फसल खरीफ और रबी दोनों ही बसा हो जाती हैं। अगर वर्षा ज्यादा हो जाय तो भी वह लाभदायक नहीं हानी क्योंकि लखी और जोरगर मानमून से रबी की जिजाद में बापा पत्ती है। अत्र न में अगर ज्यादा वर्षा हो जाय तो वह फसल को नष्ट करती है। जरि गर्मी और मर्दी की अधिक वर्षा मनुष्य और पशु दोनों के लिए ही लाभदायी नही है।

अधेरिया के जिनो का सग्या

जनवरी	फरवरी	माच	अप्रैल	मई	जून	जुलाई
०	०१	०३	१०	१	६	५
अगस्त	सितम्बर	अक्तूबर	नवम्बर	दिसम्बर	वषमर	
२८	१८	०१	०३	०१	१७	

ग्रीष्म ऋतु (मिनामाला में) और वर्षा जिनो की सग्या

वषा	जनवरी	फरवरी	माच	अप्रैल	मई	जून	जुलाई
६५	१११	५३	२०	८४	३१०	६८३	
जिन	०८	१६	०७	०	०७	१८	३

अगस्त	मिाम्बर	अक्तूबर	नवम्बर	दिसम्बर	वपम्बर
७० ६	६८	११	००	३३	२१५ ८
३७	०७	०९	००	०८	०५२

हजा की औसत गति (फि० मी० प्र० घटा)

जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून	जुलाई
५६	९७	८८	८८	१०७	१८६	११८
अगस्त	मिाम्बर	अक्तूबर	नवम्बर	दिसम्बर	वपम्बर	
६४	८८	७०	८७	५७	८४	

(३) प्राकृतिक वनस्पति

बिंसी प्रान्त का मयन एक सम्पन्न वनान म प्राकृतिक वनस्पति का न बहुत महत्वपूर्ण होता है। जलवायु की विभिन्न दशाया एव अ य रणा म भूमि पर अनेक प्रकार के पेड पौधे प्राकृतिक रूप म उग आत हैं व वनस्पति कहत हैं। वनस्पति, भूमि क ऊपर लगन वाली प्राकृतिक पति है। प्राकृतिक वनस्पति क अन्नगत घास, झाडिया तथा वन मिल हैं।

हमारा जिला मध्यसीय वनस्पति प्रान्त म आता है। इस प्रकार की वनस्पति ५० म० मी० स कम वर्षा वान प्रान्त म पायी जाती है। वषा की ाति म कमी क कारण वृक्षा म पनिया कम होगी और काटदार होती ह। ाया की जडे लम्बी हानी है। ाम प्रकार कई प्रकार क ववून पहा षटुलायन उगत है। पाटी क शिखरे के वष भी पया हात हैं। यह बहुत कम जत हात है। मनुष्य क िण घास अथवा भाजिया की अपना वन सम्पना कनी ाधित उपयोगी नानी है। इस िन के केवल ३६ प्रतिशत भाग पर ही वन ाय जान है।

वनों का प्रबंध —

वनों के आर्थिक महत्व का अनुभव करव ही सरकार न वना क

जाती है। दिन में रात्रि की अपेक्षा तापक्रम अधिक रहता है। कभी कभी रात में पाना भी पड़ जाता है और न्यूनतम तापमान २ स० अ० तक गिर जाता है। अधिकतर मौसम शुष्क रहता है। सर्तों के दिनों में पर्जन्य की ओर से आने वाले तूफानों से इस जिले में थोड़ी वर्षा हो जाती है। सर्तों के मौसम में वर्षा का यह माप २५ मिमीमीटर का आसपास रहती है किन्तु वर्षा के नियम इसका विषय महत्व है। खेती की फसल के लिये यह अत्यन्त लाभप्रद है क्योंकि इस समय गन्ना, चना आदि फसल में मिर्बाई के द्वारा तलाय किया जा रहे होते हैं। इस वर्षा के आवरण होते हैं।

अनुशासना का समय वाराणसी जो एक कमजोर मानसून और उसके बाद कम सर्तों की वर्षा का है। इस प्रकार के पुरे वर्ष में वाराणसी जमीन में बोया जा जाय ता भी वह लाभदायक नष्ट हो जाता है। अगर वर्षा ज्यादा मानसून से खेती की विज्ञान में बाधा पड़ती है। अगर न में अगर ज्यादा वर्षा हो जाय तो वह फसल को नष्ट कर देती है। जहाँ गर्मी और सर्तों का अधिक वर्षा मनुष्य और पशु दोनों के लिए ही लाभकारी नष्ट है।

अधेरिया के दिनों की माप

जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून	जुलाई
०	०१	०३	१२	५	६	५
अगस्त	सितम्बर	अक्तूबर	नवम्बर	दिसम्बर	वर्ष भर	
२८	१८	०६	०३	०१	२७	

औसत वर्षा (मिलीमिटर में) और वर्षा के दिनों की माप

	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून	जुलाई
वर्षा	६५	११५	५३	५०	८८	१८०	६८३
दिन	०८	१८	०७	०६	०७	१८	३१

	अगस्त	सितम्बर	अक्तूबर	नवम्बर	दिसम्बर	वर्ष भर
वर्षा	७० ६	६८	११	००	३३	२१५ ८
दिन	५७	०७	०२	००	०८	०५२

हवा की औसत गति (फ़ी० मी० प्र० घंटा)

जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून	जुलाई
५६	६७	८६	८८	१०७	१३६	११८
अगस्त	सितम्बर	अक्तूबर	नवम्बर	दिसम्बर	वर्ष भर	
६४	८८	७०	६७	५७	८४	

(३) प्राकृतिक वनस्पति

किसी प्रदेश का समय एवं सम्पन्न बनाने में प्राकृतिक वनस्पति का स्थान बहुत महत्वपूर्ण होता है। जलवायु की विभिन्न दशाओं एवं अथवा कारणों से भूमि पर अनेक प्रकार के पेड़ पौधे प्राकृतिक रूप से उग आते हैं। उन्हें वनस्पति कहते हैं। वनस्पति, भूमि के ऊपर उगने वाली प्राकृतिक सम्पत्ति है। प्राकृतिक वनस्पति के अन्तर्गत घास, झाड़ियाँ तथा वन शामिल हैं।

हमारा जिला मध्यस्थलीय वनस्पति प्रदेश में आता है। इस प्रकार की वनस्पति ५० से ८० मी० से कम वर्षा वाले प्रदेश में पायी जाती है। वर्षा की प्राप्ति में कमी व कारण वक्षों में पत्तियाँ कम, छोटी और काटेदार होता है। वन्यता की जड़ें लम्बी होती हैं। इस प्रकार कई प्रकार के बज्जल पत्तों बहुतायत में उगते हैं। जाटो व अजय के वन भी पत्तों वाले हैं। यह बहुत कम जल चाहते हैं। मनुष्य के लिए घास अथवा झाड़ियों की अपेक्षा वन सम्पदा कहा अधिक उपयोगी होती है। इस जिले में केवल ३-५ प्रतिशत भाग पर ही वन पाये जाते हैं।

पत्तों का प्रबंध—

वन के आर्थिक महत्त्व को अनुभव करके ही सरकार ने वन के

मरक्षण की नीति अपनाई है। समस्त वन सरकार की सम्पत्ति समझे जाते हैं। उनका प्रबंध वन विभाग करता है। गंगानगर जिले का इस बात का गव है कि राजस्थान में मिचित वन का शुद्धावत यहाँ हुई है। 'धार व रमित्तान' में वनों का उगाना एक बहुत बड़ा प्रयत्न था। नहरों में इस वन योजना को कुछ आशा बंधाई। गंगनहर के आन पर वितरक नहरों व महार सहाने पट समाय गये। अन्य नहरों के आन पर भी व लगान का क्रम जारी रहा।

हनुमान गढ़ का बीड़ —

बीकानेर राज्य के जमान में हनुमानगढ़ बीड़ नामक एक जंगल था। यह हनुमानगढ़ कसब के पूरक में स्थित था और १० ००० एकड़ के क्षेत्रफल में फैला हुआ था। इसकी लम्बाई १० मील और चौड़ाई २ से ४ मील तक थी। यह सारा भू-भाग घाघर की घाटी में होने के कारण हर साल बाढ़ में प्रभावित हो जाता था। इस क्षेत्र में जौ, मक्का, बजड़ा, जल, बेरी आदि के वृक्ष थे। यह स्थान गिकारगाह के रूप में सुप्रसिद्ध था। १६१३ में जयपुर राज्य के भूतपूर्व जागीरदारों के समाने के लिए इस सुन्दर बीड़ का काट आरम्भ किया गया। उसी स्थान पर बाबा गाँव में एक नया वन उगान का वन विभाग में १९५७ तक कार्य शुरू किया है। यह वन ५००० एकड़ में फैला हुआ और नहरों द्वारा मिचित क्षेत्र में होगा।

जिले में पाये जाने वाले पेड़ —

खेजडा — खेजड़े के पत्ते इस जिले में बहुतायत से उगते हैं। इसकी पत्ती की माँगरी बहुत है और उसकी सरकारी में इस्तेमाल करते हैं। खेजड़े के लकड़ी घटिया किस्म की होती है। बामने के बाड़े दिन धाँ उसमें कीटा लग जाता है और कुछ महीना में उसका पूरा खराब हो जाता है। इसकी लकड़ी गोबर में दबाकर रखने में, या कुछ दिन पानी में डूबी रखने से या नमक में डबाकर रखने से मजबूत हो जाती है और कीटा नहीं लगता। इसकी लकड़ा हमारतो काम की नहीं है लेकिन दहाती योग अपने कच्चे मकानों, छपरों में

इसकी काम में लेते हैं। हल, गाड़ी की पूठी इत्यादि बनाने में यह काम आती है।

फोग—इस जिले के कुछ भागों में फोग के पड़ भी पाये जाते हैं। इस पड़ को बहुत कम पानी की आवश्यकता होती है। इसके फूल को लोग **जान** के काम में लेते हैं। इसकी लकड़ी जलाने का काम आती है।

रोहिडा—रोहिडा भी इस जिले में देखा जाता है। माच के महीने में इस पर फूल आता है और बड़ा सुंदर लगता है।

कैर—कैर के पड़ भी यहाँ पड़े होते हैं। इसका फल टट कहलाता है। इसको लोग खाते हैं, सजी व अचार बनाने में और सुखाकर भी काम में लाते हैं।

जाल जान पर फल मई व जून में आता है उसको पीछू कहते हैं। उस लोग खाते हैं।

बेरी—कई प्रकार के बेरी के पड़ इस जिले में उगते हैं। इनके बेर खाने के काम आते हैं। इनको सुखाकर पीसकर भी शामील साग खाते हैं। इनके सूखे पत्ता को पाला कहते हैं और उस जानवरों को खिलाने के काम में लाते हैं। इनके काष्ठ को बाढ़ लगाने के काम में लेते हैं।

जुल या फीर—यह एक नहरों के किनारे पर व अन्य स्थानों पर उगाया जाता है। इसकी लकड़ी मजबूत व कठोर होती है। इसका प्रयोग अधिकतर ईंधन की तरह होता है। शान्तियों, हल व कृषि के अन्य औजार बनाने में भी इसकी लकड़ी का प्रयोग किया जाता है।

शीशम—शीशम के वृक्ष इस जिले में नहरों के किनारे उगाये गये हैं। यह लकड़ी भूरे रंग की होती है और साधारणतया कठोर लगने वाली होती है। यह नवीनतम तथा टिकाऊ के लिये विख्यात है। फर्नीचर के लिए यह लकड़ी बहुत उपयुक्त मानी जाती है तथा इसमें अनपारिया भेज, कुर्सी आदि बनाई जाती हैं। इमारती कामों में भी इसका खूब प्रयोग होता है। इसमें दरवाजे कड़ाके व बिन्दिया भी बनाये जाते हैं।

शहतूत—शहतूत के वृक्ष भी काफी मात्रा में जिले में उन स्थानों में लगाये गये हैं जहाँ सिंचाई की सुविधा प्राप्त है। इसकी लकड़ी मुलायम और मजबूत होती है। खेत का सामान बनाने के लिये इसका प्रयोग होता है।

साना—सहमील सूरतगढ़ और अनूपगढ़ में एक भागी अरब घास उग जाती है जिसे साना कहते हैं। इस भाड़ी की जमीन में गड़ खो कर जला देते हैं। उसका रस निकल कर जमीन में गिरा हुआ घास में जमा होता रहता है जो सूख कर ठोस रूप में इकट्ठा हो जाता है। इसको 'सज्जी' कहते हैं। यह निम्न श्रेणी का सोदा होती है। यह पापन घास बनाने के काम आती है।

आक—आक यहाँ मूब होता है। इसकी लकड़ी को शमीर साग जलाने के काम में लते हैं। उसकी लकड़ी के पीछे में रस्मी बनाते हैं जो मजबूती में सन के बरोबर होती है।

पन्नी—नाली के छत्र में पन्नी घास काफी मात्रा में पैदा होती है यह छप्पर घासन के काम आती है। उसकी जड़ें निकाल लते हैं। यह लवण कहलाती है। गर्मी के मौसम में उसको दहिया बनाई जाती है।

सरफडा सरफडा भी यहाँ मूब उगता है। उसमें मूज बनाई जाती है। सरफडे के मूले और पदों बनाये जाते हैं।

घास—बोड़ी सी वर्षा हो जाने पर भी यहाँ अच्छी घास उग जाती है। हनुमानगढ़ सूरतगढ़ और अनूपगढ़ में घास अच्छी बड़ी और कई प्रकार की होती है जिनको 'सेवण' 'घामन' 'खीव' आदि कहते हैं। जिले भर में 'मुरट' नाम की विषटन वाली घास बहुतायत से उत्पन्न होती है। वर्षा ऋतु में तरह तरह की घास त्रय सामझी, बूर बरू आदि के उग आने के कारण ही जिले का प्राकृतिक सौन्दर्य बढ़ जाता है।

बनो की गीण उपन—

चमड़ा रंगने के पदार्थ—बबूल व वृक्ष की छाल चमड़ा रंगने के

काम आती है। हर पड़ो को काट कर उनकी छाल उतार ली जाती है। मूख जाने पर इसमें चमड़ा रंगन का काम लिया जाता है।

गाद—पड़ा में निकलने वाला गाद को भी शायीग लाग एकत्रित कर लते हैं जो बर्फ प्रकार के काम में आता है।

(४) पशु धन

मानव व प्राणिज विकास का सम्बन्ध पशु धन पर भी निर्भर है। पशुओं से मनुष्य को खाद्य पदार्थ तथा अनेक प्रकार के वस्त्र माल प्राप्त हान है। खाद्य पदार्थों में दूध, मक्खन वी प्राणि का स्थान बहुत महत्वपूर्ण है। जून चमड़ा ऊनी वस्त्र या रेशमी वस्त्र जीवों की ही से हैं। हमारे यहाँ खेती में भी पशुओं का बड़ा हाथ है। बिना पशुओं के सहायता के यहाँ खेती हा ही नहीं सकती। गाँवा में जहाँ न ता रेलमार्ग है और न मोटरों वहाँ पशु ही बोझ ढोते हैं। इस प्रकार पशुओं में हम बहुत बड़ा आर्थिक लाभ पान्चना है। मनुष्य के रहने मरने पर भी पशुओं का प्रभाव पड़ता है।

पशुओं का हम दो भागों में बाँट सकते हैं (१) जंगली पशु और (२) पालतू पशु। हमारे जिन में जंगली पशुओं की संख्या बहुत कम है पशु पालने के लिए अधिक उपयुक्त जलवायु साधारण गुल्म जलवायु हानी है। मरुस्थल के चारा और जहाँ वर्षा की प्राप्ति अप्रत्याशित कम होती है पशु अधिक पाल जाते हैं। यही कारण है कि इस जिले में अधिकतर किसान पशु पालते हैं। हमारे जिले में पशुओं की संख्या ११ ६६ ३०४ है।

पालतू पशु—

गाय—बैल—इस जिले में गाय बला की संख्या ३६६२०२ है। बल का प्रयोग खेती के अनेकों कामों में होता है। वह हल खींचता है गाड़िया में बोझ ढोता है अनाज पवन पर पीछों को कुचल कर अन्न और भसा

भरण करता है । गायेँ दूध देती हैं जो हमारे लिये बहुत उपयोगी है । हमारे यहाँ राद्धी नस्ल की गायेँ पाली जाती हैं । गाय पालन का एक मात्र उद्देश्य दुग्ध प्राप्ति और बछड़ा की उत्पत्ति है ।

भैंस—हमारे जिले में भैंसों की संख्या १,८७ १०२ है । भैंसों को विशेषतया दूध के लिये पाली जाती हैं । भैंस का दूध गाय के दूध की अपेक्षा अधिक चर्बोयुक्त होता है तथा इसमें घी का अनुपात कहीं अधिक होता है । इसलिये दूध के लिये भैंस को योग्य अधिक पालन है । भैंसों में अधिक उपयोगिता नहीं होता इनकी संख्या भैंसों की अपेक्षा कम है फिर भी गाड़ी खींचने तथा कृषि के साधारण कार्यों में प्रयुक्त किये जाते हैं । भैंसों के लिये गाय की भाँति अधिक कीमती चारे की आवश्यकता नहीं होती । यह साधारण चार पर भी अच्छा दूध देती है । ग्रीष्मकाल में जब तेज धूप पड़ती है और तापक्रम बढ़ जाता है तो भैंसों के दुग्ध में भी कमी हो जाती है । अक्तूबर-नवम्बर के महीनों में भैंसें सत्रम अधिक दूध देती हैं । हमारे यहाँ मुराई नस्ल की भैंसें पाली जाती हैं ।

भेड़—पशु सम्पत्ति में भेड़ों का बड़ा महत्त्व है । वे ऊँत तथा मांस के लिये पाली जाती हैं । हमारे जिले में गाली नस्ल की भेड़ें पाली जाती हैं । इनकी संख्या २७६३६८ है । बर्हिआ नस्ल की भेड़ें पालन का प्रयास किया जा रहा है । जहाँ परी हुई भूमि में भेड़ें आराम से रहती हैं । यही कारण है कि भेड़ पालना बहुत आसान है और यह सस्ता व्यवसाय है ।

बकरी—इस जिले में बकरियों की संख्या १६८५२१ है जो दूध तथा गोشت के लिये पाली जाती हैं । ये सामान्य चारे से अपना पेट भर लेती हैं अतः गरीब लोग इन्हें पालते हैं । वस्तुतः यह निधन नोगा की गाय है । बकरी का बंधनकर गोशत प्राप्त किया जाता है । इनका चमड़ा अच्छा माना जाता है । यह बहुत मजबूत होता है । इसमें बर्हिआ देनी जूति बनाई जाती है । इनका बाला में नस्ल व कम्बल रस्मी आदि भी बनाए जाते हैं ।

ऊट—यह शुष्क मरुस्थलीय प्रदेश का पशु है। ऊट सवारा के काम आता है और बोझ ढोने के लिये भी प्रयुक्त होता है। यह कई दिना तक बिना पानी पिय रह सकता है। मरुस्थलीय प्रदेशों के लिये बहुत उपयुक्त होने के कारण हमको 'मरुस्थल का जहाज' कहने हैं। इसे हल और गादिया में भी जोना जाता है। ऊटनी का दूध दवा के रूप में बकुछ रोगों के लिए साधारण रूप में पीने के काम आता है। ऊट की खाल के घड़े बड़े कुप्य बनाये जाते हैं जो तल या घों भरने के काम आते हैं। हमारे जिले में इनकी संख्या ६१०७० है।

गाड़ी—बोझ ढोने के काम आता है। इस साधारण भोजन की आवश्यकता होती है। इस जिले में बोझ ढाने का यह मुख्य पशु है। गाड़ी में भी जोना जाता है जो खोता गाड़ी कहलाती है। यह जिले के प्रत्येक भाग में पाया जाता है। हमारे जिले में गधों की संख्या ६६६२ है।

मूँझर—यह एक गदा और अपवित्र पशु है अतः उच्च जाति के लोग इस छूना तक भी पसन्द नहीं करने। मुसलमानों में इसके गोश्वन से परहेज होता है। निधन और छोटी जातियाँ इस पालती हैं मुख्यतः महतर इस पालन का कार्य करते हैं। इनमें गाश्वन, चर्बी तथा बाल प्राप्त होते हैं। इनके पालन से काफी आय हो जाती है। जिले में इनकी संख्या ५४२ है।

जंगली पशु—

हमारे जिले में कुछ जंगली पशु भी मिलते हैं। इनमें भैंडिया, लामड़ी, खरगाश नीलगाय तथा हिरन मुख्य हैं। हिरन व खरगाश का शिकार किया जाता है। अनूपगढ़ और रायसिंहनगर तहसीलों में कभी कभी गारखर भी मिल जाता है। हनुमानगढ़ तहसील में हिरन भी बहुतायत में पाये जाते हैं। इनकी दोनों जातियाँ—चीत्तल और काले—मिलती हैं। घग्घर की घाटी में चीत्तल भी मिलते हैं। मूँझगढ़ तहसील में नीलगाय भी पायी जाती है।

पक्षी—

अन्य प्रकार के पशु पक्षी हमारे जिले में मिलते हैं। तान, कौवे, चीन, तीतर, मोटावण, बटबड, बटेर, मुर्गी, सारस, बगुल आदि स्थान पर मिलते हैं। तीतर, बटेर आदि का शिकार किया जाता है। हनुमानगढ़ तहसील में नानी के किनारे कुज्ज आदि कई प्रकार के पक्षी होते हैं जिनका शिकार किया जाता है।

पशुधन पर निर्भर जोग—

हमारा पशुधन महत्वपूर्ण है। इससे प्राप्त होने वाले पदार्थों से निम्नलिखित उद्योग निर्भर हैं —

चमड़े का उद्योग—

हमारे जिले में प्रविष्ट मकिया पशु मरते हैं। उनमें पर्याप्त मात्रा में खानें मिलती हैं। उत्तम किल्ले के पशुधन से प्राप्त होने वाली खान बटिया और मामूली पशुधन की पटिया खान होती है। इनमें से कुछ खान तो बिना रंग ही बाहर निर्गमन कर ले जाती है और कुछ स्थानीय रूप से रंग कर काम में ले जाती हैं।

मांस का उद्योग—

इस जिले के निवासियों के भोजन में मांस का महत्व बहुत कम रहा है परन्तु अब वह धीरे धीरे बढ़ रहा है। मांस की पूर्ति बस्वो ब नगरा के समाधियों द्वारा की जाती है। अतः यह स्थानीय उद्योग है। यहाँ अधिकतर बकरा, बकरी, भेड़ तथा सूअर का ही मांस खाया जाता है। हमारे यहाँ बसाई कमजोर और मस्त पशुधन को बाहर बाजार में और उनके ताला मांस बेचते हैं।

मुर्गी पालन—

मुर्गीपालन का उद्योग आर्थिक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है। मुर्गी के

मास के लिये ही नहीं पाली जाती बल्कि इसमें अण्डे भी प्राप्त होते हैं। अण्डों का कारण मुर्गिया का महत्व अधिक है। यानी मुर्गी का गोشت भी अच्छा माना जाता है तथा बहुत खाया जाता है परन्तु अण्डे अपने गुणों के कारण अधिक खाये जाने हैं। इस जिले में मुर्गीपालन का प्रचार अधिकतर भाग में है परन्तु यह काम गरीब लोगों के पास में है। छोटी जाति के लोग अनेक महायक माधन की तरह यह काम करने हैं। अतः मुर्गीपालन का धंधा अत्यवस्थित है। मुर्गीपालन का धंधा बहुत कम खर्चीला है परन्तु पर्याप्त आय देने वाला है। इस जिले में मुर्गिया की संख्या ७०७२७ है। हाल में कुछ बड़े मुर्गीपालन केन्द्र भी स्थापित हुए हैं जहाँ यह कार्य वनानिमित्त तरीक़ों से किया जाता है।

ऊन प्राप्ति —

इस जिले में २७८३६८ भंड पानी जाती हैं जिनमें प्रतिवर्ष ५८/६४ कि० ग्रा० ऊन प्राप्त होती है। प्रति भंड वापिक उत्पादन लगभग ८२२ ग्राम है। यहाँ की ऊन साधारण काटि की है जिसका कारण जिन की गम जनवायु है। इस जिले में समस्त ऊन गाठ बाबने के लिये बीकानेर भेज दी जाती है। राज्य का भेड विभाग बनिया ऊन की उत्पत्ति बताने के लिये प्रयत्नशील है। इस जिले में ऊन प्राप्त करने के धंधे का पर्याप्त महत्व है अतः इसका विकास किया जाना जरूरी है।

दुग्ध उद्योग —

इस जिले में दुग्ध का धंधा मुख्यतः कृषि के महायक धंधे के रूप में जाना है। सभी किसान पशु रखते हैं और निकटस्थ नगरों में अपना दूध प्रत्येक घी बच देने हैं। जिले में उत्पादन मध्यम आकड़े उपलब्ध नहीं हैं। अधिकतर दूध पीने के काम में लिया जाता है। कुछ का घी निकाला जाता है और गव का खोया मक्खन, चीनी इत्यादि बनाया जाता है। जो दूध हम मिश्रता है उसमें आधे में अधिक भस्म में, आधे में कम गावों से मिलता है। इस जिले में अभी दुग्धालाया का विकास नहीं हुआ है और यह योजना स्थानीय रूप से ही किया जाता है।

५ सिंचाई

गगानगर कृषि प्रधान जिला है। मेती या म्य भूमि इस जिले में पर्याप्त है परंतु जिले की भौगोलिक परिस्थिति तथा वर्षा का स्वभाव इस प्रकार का है कि सफनतापूर्वक कृषि कार्य चलाने के लिये सिंचाई के कृषि साधना का जुगल अत्यावश्यक है। वर्षा के अभाव के कारण इस क्षेत्र में प्रायः एक अकाल पड़ा करता है जिनमें जन व पशु भारी मरणा में नष्ट हो जाते हैं। वर्षा की कमी और जीवन यापन के साधना के अभाव में यहां क्षेत्र बहुत ही कम आबाद था।

राजस्थान के राजबाड़ा में बांझानेर राज्य के काल इस जिले में राज नहरों द्वारा सिंचाई का प्रबंध उपनयन था। इस जिले के कुल क्षेत्रफल २० ६१ ६५७ हेक्टेयर में से केवल ८०,१३४ हेक्टेयर भूमि कृषि के प्रयोग है। कृषियोग्य भूमि में से ६०४ ६०४ हेक्टेयर भूमि पर सिंचाई होती है। अर्थात् २४ ७५ प्रतिशत भूमि पर सिंचाई होता है। जिले में वर्तमान सिंचाई के लिये ४ नहरों का विस्तार है—(१) घग्घर की नहरें (२) गग नहर (३) भावटा की नहरें और (४) राजस्थान नहर।

इन नहरों से भावटिन इस क्षेत्र में एक नहर आती थी जिसे पश्चिमी यमुना नहर कहते थे। पहले इस नहर का नाम 'फ़ीरोजगढ़' नहर का नाम से प्रसिद्ध था जिसकी बीकानेर राज्य में ३२ कि० मी० की लम्बाई थी। इस जिले के कुछ क्षेत्र में सिंचाई होती थी। बीकानेर में इस नहर में पानी आना बन्द हो गया था। बहुत प्रयत्न करने पर भादरा तहसील की १८४ हेक्टेयर भूमि इससे सांची जान की अनुमति पत्र सरकार ने दी। फिर बाद में सन् १८६३ ई० में इस नहर में पानी आना बन्द हो गया। इसके कारण यह बतलाया जाता है कि उस साल अधिक वर्षा होने से यह नहर सूख गई और बहुत सबाही हुई। तत्पश्चात् इसकी मरम्मत न करके इसे हमला के लिये ही बन्द कर दिया गया।